डॉ. सनयात सेन की भूमिका

आधुनिक चीन के इतिहास में डा. सनयात सेन का महत्वपूर्ण स्थान है। इनका जन्म 1866 ई में हुआ था। वे चीन की तत्कालीन स्थिति से बड़ा दुखी थे। उनका निश्चित मत था कि चीन का उद्धार तभी हो सकता है जब उनका पाश्चिमीकरण हो तथा लोग परम्परागत पुराने विचारों का त्याग करें।

डा. सनयात सेन मंचू राजवंश को चीन के लिये अभिशाप माना तथा उसे समाप्त करने के लिये एक गुप्त क्रांतिकारी दल का संगठन किया। इस दल के नेतृत्व में 1895 ई में कैंटन में एक विद्रोह हुआ। पर कतिपय कारणों से यह विद्रोह सफल नहीं हुआ। इसके बाद इन्होंने तुंग-मेंग हुई पार्टी का संगठन किया। बाद में उन्होंने तुंग-मेंग हुई का नाम बदल कर कुओमिंतांग रखा।

डॉ. सनयात सेन ने दल का संगठन करने के लिये रूस से सहायता मांगी। 1923 ई में रूस की सरकार ने उन्हें सहायता देना शुरू किया। माइकेल बोरोदिन नामक रूसी सलाहकार ने डॉ. सेन को कुओमिंतांग पार्टी के पुर्नगठन में बड़ी सहायता की। रूस की साम्यवादी पार्टी के आधार पर ही कुओमिंतांग पार्टी का संगठन हुआ ताकि साधारण जनता से उसका सम्बन्ध स्थापित हो जाये। कुछ ही दिनों में यह पार्टी बड़ी लोकप्रिय हो गयी। डॉ. सनयात सेन को इस पार्टी का अध्यक्ष बनाया गया। 1921 ई में चीन में साम्यवादी पार्टी की स्थापना हुई। 1924 में कुओमिंतांग एवं साम्यवादी पार्टी ने मिलकर काम करने का निर्णय लिया।

कुओमिंतांग दल को पुनः संगठित करने के बाद डॉ. सनयात सेन ने इस दल को एक राजनीतिक दर्शन तथा कार्यक्रम प्रदान किया। उन्होंने जनता के लिए तीन सिद्धान्तों

का प्रतिपादन किया –

(क) राष्ट्रीयता – डॉ. सेन की राष्ट्रीयता का अर्थ था कि चीन को विदेशी प्रभावों से मुक्त किया जाये और लोगों में राष्ट्रप्रेम की भावना इस तरह जाग्रत की जाये कि वे राष्ट्रीयता के लिये मर मिटने को तैयार हो जाये।

(ख) लोकतंत्र – डॉ. सनयात सेन अपने देश में सच्चा लोकतंत्र कायम करना चाहते थे। वे सही अर्थ में चीन में जनता का, जनता के लिए और जनता द्वारा शासन स्थापित करना चाहते थे।

(ग) समाजवाद – डॉ. सनयात सेन चीन में एक ऐसी व्यवस्था का निर्माण करना चाहते थे जिसमें सभी को आर्थिक स्वतन्त्रता प्राप्त हो, और किसान तथा मजदूर सुखी जीवन व्यतीत करें।

इस उद्देश्य की पूर्ति के लिए डॉ. सनयात सेन ने क्रांति की तीन सीढ़ियां बतायी थी। पहली सीढ़ी में सेना की सहायता से क्रांतिकारियों द्वारा शासन पर अधिकार करना था। दूसरे सीढ़ी में जनता को राजनीतिक शिक्षा देनी थी और तीसरी सीढ़ी में शासन पर असाधारण जनता का अधिकार एवं शासन का संचालन लोकतंत्रीय आदर्श पर होना था।

शुरू में कुओमिनतांग का प्रभाव दक्षिण चीन के कैंटन नामक स्थान तथा इसके आसपास के इलाके तक सीमित था। शेष चीन पर अभी सामन्तों का प्रभुत्व था। डॉक्टर सनयात सेन ने कुओमितांग सेना की सहायता से मंचूरिया को छोड़कर प्रायः सारे चीन पर अधिकार कर लिया। ऐसा प्रतीत होने लगा कि चीन का राष्ट्रीय आन्दोलन संपूर्णता को प्राप्त हो गया है तभी दुर्भाग्यवश 1925 में डॉ. सनयात सेन की अचानक मृत्यु हो गयी। डॉ. सनयात

सेन की मृत्यु के बाद कुओमिताँग पार्टी का नेतृत्व च्यांग काई शेक के हाथों में आ गया।

डॉ. सनयात सेन का चीन के इतिहास में वही स्थान है जो रूस के इतिहास में लेनिन का और भारत के इतिहास में महात्मा गाँधी का। वस्तुतः उनके ही प्रयासों से चीन की जनता मंचू राजवंश से निजात पा सकी। यही कारण है कि डॉ. सेन को न केवल चीन में बल्कि एशिया के पिछड़े हुये देशों में नवजागरण का अग्रदूत माना जाता है।

—०—